

परात् कतबो अनुनय-विनय
ननि, परं गोसाईं बजलाह
त ई स्थायी घाट भऽ गेलैक,
ओकरा अन्यत्र जयबाक हेतु
देलथिन। अद्यावधि 'ठेगहा'
प्रख्यात अछि जे ओहि प्रान्तक
सभकेँ गोसाईंजीक स्मरण
पैत छनि।

गोसाईंजीक दोसर कथा जग-
पुरीसँ सम्बद्ध छनि। एक बेर
मण्डली समेत ओ जगन्नाथपुरी
ह। अपराह्मे पहुँचल रहथि,
सभ थाकल छलाह, कारण जे
यात्री रहथि, ताहि दिनमे रेलक
कोन; अतएव सभ क्यो किछु खा-
सूति रहलाह। प्रातःकाल सबेरे
संग गोसाईंजी मन्दिरक
द्वारपर पहुँचलाह आ कीर्तन
कयलनि। जा कि डोलकिया
कपर चोट देलक, सभक सभ
लोकनि जुटि गेलाह आ कौआ
काँव-काँव करऽ लगलाह।
सभ बजलाह जे एहि ठाम डोलक
पवाक नियम नहि छैक, तेँ अहाँ-
एकरा बन्द करू। पण्डालोकनि
ढोठ आ जिद्दी होइत छथि से तेँ
केँ समाने अनुभव होयत।
गोसाईंजी बेचारे सभक संग
दरसँ एक कात भऽ अन्यत्र हातामे
कऽ कीर्तन करऽ लगलाह। हुनका
ते मन्दिरक पट अपने बंद भऽ गेल।
काल पण्डालोकनि प्रतीक्षा कय-
तखन ओकरा बलात् खोलबाक
स कयलनि, तखनो जखन पट
खुजल तँ ओ सभ जानि गेलाह
गोसाईंजीक कारणेँ भेल अछि।
सरदार पण्डा अपन पण्डाक
संग गोसाईंजीक समीप
लाह जतऽ ओ कीर्तनमे मस्त
। कीर्तन समाप्त भेलापर
गोसाईंजी पण्डासँ अयबाक कारण
थन। सरदार पण्डा करबद्ध

हुनकासँ क्षमा याचना कयलक। सर-
दार पण्डा कहलकनि जे पट बन्द
होयबासँ भोग-राग सभ बन्द अछि,
हमरा लोकनिसँ अपराध भेल अछि,

पुनः अपन चालकऽ ओतहि कीर्तन
करू। भोग-राग बन्द होयबाक कथा
सुनि छट गोसाईंजी मन्दिरक मुख्य
द्वारपर कीर्तन प्रारम्भ कयलनि तखन
पुनः पट खुजल। चारू कात गोसाईं
जीक जय-जयकार मचि गेल।

पर्वतक शिखरकेँ तोड़ि...

हम युग-युगसँ निर्माण-पथक अश्रान्त पथिक
हमरा अन्तरमे रहल अटल विश्वास सदा
हम रोकि प्रभंजनकेँ दी अपना भुजबलसँ
संकल्प हमर दृढ़ देखि खसय मुँच्छित विपदा
हम मनुज सकल भारतवासी मानववादी
योजनाबद्ध जीवन यापन करबाक हेतु
बाहर-अन्तरकेँ राखि परिष्कृत, पौरुषसँ
दी बान्हि अगम जलनिधिपर पाथरकेर सेतु
कतबो अगाध ई गाधिनन्दिनी रहथु मुदा
दूनू तट कसिकऽ बान्हि नाथिकऽ रखने छी
सम्मिलित शक्ति हमरे दुर्गाक स्वरूप धरय
अंगारक माला हमहि गाँथिकऽ रखने छी
श्रमशीलताक की मोल मनुष्यक जीवनमे
अनुभवक तराजूपर रखने छी तौलि-जोखि
हमरे श्रम-सीकरसँ भऽ साद्र धरा हरियर
रखने छथि वैभव-पूर्ण समुज्ज्वल अपन कोखि
नहि भाग्यक राखि भरोस भाड़ पी भकुआयल
छी रहनिहार आर्यावर्तक हम अभिमानी
हम तोड़ि तलातल पाताल-स्थित गंगाकेँ
धरतीकेँ शीतल करक हेतु ऊपर आनी
पर्वतक शिखरकेँ तोड़ि बना दी हम समतल
मरुभूमि कोड़ि श्यामलतासँ भरि दी अंचल
हम भगीरथक अनुगामी उद्यमशील मनुज
नगपतिक शिखरसँ उतरि पड़थि गंगा चंचल
स्वातन्त्र्य-समरमे विजयशंख छी फूकि चुकल
संलग्नताक परिचय जग पहिने पोने अछि
हम आत्मबली संघर्षशील चेतन प्राणी
पशुबल हमरे लग उन्नत माथ झुकौने अछि
हम लौह-पिण्डकेँ तरल बनाबी फूक मारि
निःश्वास हमर तँजस धारा उगिलैत रहय
धमनीमे रक्तक धार बनल बिजुली कड़कय
श्रम-घन जीवन-धारा बनि-बनि पिघलैत रहय
छातीक जोरसँ मन्थन कऽ उत्साह सिन्धु
बाहर करैत छी सुधा भरल सोनाक घँल
हम तपःपूत, राष्ट्रक कण-कणसँ देब छोड़ा
युग-युगसँ बैसल कलुष दोनता-जन्य मूल
मूल्यांकन कऽ रखने अनुभव-मंजूषामे
श्रमकेर महत्ता बुझा देब जगतीतलकेँ
बरिसय जगमे शान्तिक अजस्र धारा अनुखन
शीतल कऽ सकय सभक सन्तापित हीतलकेँ

— श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

(आकाशवाणीक सौजन्यसँ)

अष्टसिद्धि आ नवनिधिकेँ
तार्थ करऽबला अनेक अलौकिक प्रयत्न
गोसाईंजीक जीवनसँ
अछि, मुदा सभक उद्घरण एहि
संभव नहि थिक। गोसाईंजीक
परमरमाक निवासी रहथि, नया
अधिकतर ओ फटकी मौजेमे
कुटीमे रहैत छलाह। हुनक
छौ ठाम अवस्थित अछि, जकरा
वली एना अछि—(१) तागा
(२) परमरमा, (३) वनगाँव,
महिनाथपुर, (४) लवनीर
(६) फटकी मौजे। एहिमे
प्रसिद्ध वनगाँवक कुटी अछि, जतऽ
फटकी मौजेक कुटी अवैत छैक
ठाम हिनक आश्रम छनि।
सहरसा जिलामे अछि आ
दरभंगा जिलान्तर्गत अछि।
कुटीमे गोसाईंजीक पादुका
अन्य सामग्री एवं शयनक अछि
सभ जहिनाक तहिना सुरक्षित
वनगाँवमे सेहो सभ वस्तु
संगृहीत छनि। दुनू ठाम नियम
पूजा-पाठ, भोग-राग, पूर्वक
अछि आ ओहिमे थोड़ो
भेलापर विघ्न होमऽ लगैत
अद्यावधि ओहि ठाम लोक
पड़ैत छैक जे कोनो अदृश
ओतुक्का वातावरणकेँ प्रभाव
रहल छैक। ओतुक्का
वैकुण्ठवासी भेलापर गोसाईं
सम्बन्धमे कैक टा अदृश
चर्च करैत छथि, जकरा हुनका
कपोल-कल्पित कहि नहि
छी। जेना आइयो-कालि
पलंगपर हुनक ओछाओत
छनि, पलंगक समीप पादुका
जाइत छनि, मशहरी लगा
छनि। एहि व्यवस्थामे
भेलापर अशुभ होमऽ लगैत
परमहंस लक्ष्मीनाथ
केवल योगाभ्यासी नहि
सिद्ध पुरुष रहथि, वाक्य-
(शेष पृष्ठ १६)